IJCRM
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

समावेशी विकास में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका

डॉ० घनश्याम सैनी
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय, सीकर राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * डॉ० घनश्याम सैनी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21159690

सारांश

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वर्तमान में एक उभरता हुआ ज्ञान विमर्श का बिन्दु है। नीति आयोग की वर्ष 2018 की चौथी परिचर्चा में इसमें समावेशी विकास जोड़ा गया। जिसकी मुख्य थीम थी—'समावेशी विकास के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस'। इस परिचर्चा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और उसके भविष्य, समावेशी विकास में भूमिका का अवलोकन किया गया। भारतीय संदर्भ में समावेशी विकास की अवधारणा नई नहीं है हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों में सबको साथ लेकर चलने का भाव निहित है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः ' इसी संदर्भ को पुष्ट करता है। उदारीकरण के बाद इस विकास की अवधारणा को विश्व के सभी देशों द्वारा प्रमुखता से अपनाया गया और समावेशी विकास की अवधारणा ने वैश्विक संदर्भ में अपनी महता बनायी है। यह शोधपत्र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और समावेशी विकास में उसकी भूमिका पर आधारित हैं जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को समावेशी विकास के एक उपकरण के रूप में देखा गया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस किस प्रकार समावेशी विकास के लक्ष्यों जैसे- स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, वित्तीय सेवाएं, समाजिक समानता को प्राप्त करने में सहायक बन सकता है, विकास और एआई के परस्पर सम्बन्ध कैसे है आदि की पड़ताल है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-05-2026
- **Accepted:** 29-06-2026
- **Published:** 03-07-2026
- **IJCRM:** 5(4); 2026: 17-20
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ०. घनश्याम सैनी. समावेशी विकास में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):17-20.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, विकास, शिक्षा, उपयोगिता, समावेशी विकास ।

© 2026 डॉ०. घनश्याम सैनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

आज तेजी से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है जिसने हमारे समाज के विभिन्न पहलूओं को प्रभावित किया है। एआई ने सामाजिक विकास में नये अवसरों के द्वार खोले हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसा निरंतर विकसित होता क्षेत्र है जो हमारे जीवन जीने, काम करने एवं व्यवहार करने के तरीकों को बदल रहा है। जैसे-जैसे एआई तकनीक आगे बढती है,समाज में जटिल समस्याओं को हल करने के लिए, नियमित कार्यों को स्वचालित करने और मानवीय क्षमताओं को बढ़ाने के लिए इसका प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है। एआई से वर्तमान में सामाजिक जीवन में कई लाभ होने की संभावना है जैसे उत्पादकता में वृद्धि और दक्षता में वृद्धि, बेहतर स्वास्थ्य सेवा परिणाम, उच्च गुणवत्तापूर्ण जीवन स्तर आदि। किसी भी देश के लिए एआई का विकास और क्रियान्वयन महत्वपूर्ण नैतिक, सामाजिक और आर्थिक मुद्दे भी उठाता है जिनका समाधान आवश्यक है। उदाहरण के लिए एआई को व्यापक रूप से अपनाने पर वर्तमान नौकरियों के स्वरूप में भारी बदलाव आ सकता है, खासकर उन क्षेत्रों में जो स्वचालन के प्रति संवेदनशील है। यह उन श्रमिकों के लिए समस्याएं बढा सकती है जिनके पास उचित कौशल नहीं है। समाज में इससे मौजूदा आर्थिक असमानताएं और बढ सकती है। यह शोध पत्र समाज के विभिन्न पहलूओं पर एआई के प्रभाव का व्यापक अवलोकन करता है। समावेशी विकास में एआई की भूमिका का अन्वेषण करने का प्रयास करता है। एआई को समावेशी विकास के साथ कैसे जोडा जाए या समावेशी विकास एआई के माध्यम से किस प्रकार हासिल किया जाए।

विश्व में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का विकास 8 दशक पुराना है। इसे व्यापक पहचान 1970 के दशक में मिली। सबसे पहले इस ओर जापान ने पहल की। सन 1981 में फिफ्थ जेनरेशन नाम की योजना की शुरूआत की गयी। इसमें सुपर कम्यूटर के विकास के लिए एक 10 वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी थी। इसके बाद विश्व के अन्य देशों ने भी इस दिशा में कार्य किया। ब्रिटेन ने 'एल्वी' नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया। यूरोपीय संघ ने 'एस्प्रिट' नाम से एआई कार्यक्रम की शुरूआत की थी। इसके बाद कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर लागू होने वाली उन्नत तकनीकों का विकास करने के लिए एक संघ 'माइक्रो-इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्प्यूटर टेक्नोलाॅजी की स्थापना की। 1960 के दशक में प्रो. एच.एन. महाबाला के कार्यों के माध्यम से एआई हमारे देश में आया। यूएनडीपी द्वारा 1986 में स्थापित ज्ञान- आधारित कम्पयूटिंग सिस्टम (केबीसीएस) ने भी भारत के लिए एआई पर ध्यान केन्द्रित करने का मार्ग प्रशस्त किया। भारत में एआई के जनक डाॅ. राज रेड्डी को माना जाता है जिन्होनें इसके विकास एवं विस्तार में अपना योगदान दिया। सन 2018 में देश के नीति आयोग ने भारत की पहली एआई रणनीति प्रस्तुत की। सरकार ने 'AI for All ' एवं 'रिस्पाॅन्सिबल एआई फाॅर सोशल एम्पावरमेंट ' 2020 जैसी पहल की। इससे एआई का प्रयोग देश के विभिन्न हिस्सों में बढा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ है किसी मशीन या कम्पयूटर में इंटेलीजेन्स (बुद्विमत्ता) का कृत्रिम रूप से होना। जैसे गणित के द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में बेहतर ढंग से सोच समझ कर अपने काम को पूर्ण कर पाने की क्षमता हासिल करना ही एआई है। यह कार्य किसी भी रूप में हो सकता है जैसे अपनी भाषा को समझना, फिल्म देखना, सोशल मिडिया पर अपनी रूचि की चीजें देखना इसमें शामिल है। यह खेल खेलना एवं किसी मशीन, गाड़ी को संचालित कर सकने में भी समर्थ है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक प्रकार से कृत्रिम तरीके से विकसित की गई बौद्विक क्षमता है जो मानव मष्तिष्क के बराबर सोच कर किसी भी कार्य को सम्पादित करती है। वर्तमान मे इसके द्वारा ऐसे कम्पयूटर सिस्टम एवं रोबाटिक्स तैयार किये जा रहे हैं जो उन्ही तर्कों के आधार पर कार्य करते है जिन पर मानव मष्तिष्क कार्य करता है।

समावेशी विकास का शाब्दिक अर्थ - समग्रता आधारित विकास, साझा विकास और गरीब आधारित विकास है। आर्थिक नीति के एक दृष्टिकोण के रूप में, यह माना जाता है कि किसी देश में गरीबी की तीव्र विकास दर में कमी आती है तो उस देश की विकास प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी बढ जाती है। 11वीं पंचवर्षीय योजना में समावेशी विकास को इस प्रकार परिभाषित किया गया है " एक विकास प्रक्रिया जो व्यापक- आधारित लाभ देती है और सभी के लिए अवसर की समानता सुनिश्चित करती है।" समावेशी विकासका उद्वेश्य गरीबी में कमी, मानव विकास, स्वास्थ्य और काम करने, रचनात्मक होने का अवसर प्रदान करना चाहिए। इसमें संसाधनों के आवंटन को छोटे और दीर्घकालीन लाभ और बडे पैमाने पर आर्थिक संबंधों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इस समावेश में चार विशेषताएं शामिल हैं:- अवसर, क्षमता, पहुँच और सुरक्षा। अवसर की विशेषता लोगों को अधिक से अधिक अवसर पैदा करने पर केन्द्रित है और उनकी आय बढाने पर जोर देती है। क्षमता समाज में उपलब्ध अवसरों का फायदा उठाने के लिए लोगों को अपनी क्षमताओं के विकास के साधन प्रदान करने पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है। पहुंच विशेषता अवसरों और क्षमताओं को एक साथ लाने के लिए साधन प्रदान करने पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है। सुरक्षा विशेषता लोगों को आजीविका के नुकसान से बचाने के साधन प्रदान करती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि समावेशी विकास एक ऐसी अवधारणा है जिसमें जीडिपी में निरन्तर विस्तार से मापा गया आर्थिक विकास सभी चार आयामों के पैमाने और दायरे के विस्तार में योगदान प्रदान करती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आर्थिक प्रभाव

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विभिन्न उद्योगों में उत्पादन के नए कारकों को बढ़ाने के साथ साथ उत्पादन के परम्परागत कारकों जैसे - श्रम, पूंजी और नवाचार में तकनीकी परिवर्तन लाकर उत्पादन को बढाती है। यह पूंजी और श्रम की शारीरिक दखल को दूर करने की क्षमता के साथ मूल्यों और विकास के नए स्रोतों को प्राप्त करने की क्षमता रखता है। आर्थिक प्रभाव के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस देश के विकास को गति देने में सक्षम है। इसमें इंटेलिजेंट ऑटोमेशन यानी जटिल शारीरिक कार्यों को स्वचालित प्रक्रिया द्वारा करने पर ऊर्जा और समय की बचत होती है। समय एवं श्रम की बचत से संस्थागत पूंजी में वृद्धि होती है। इसमें नवाचारों का प्रसार होता हैं, एक क्षेत्र के नवाचारों का दूसरे क्षेत्रों में भी सकारात्मक परिणाम प्रदर्शित होते हैं क्योंकि उद्योग क्षेत्र वैल्यू चेन के आधार पर परस्पर निर्भर है। अभी हाल ही में एक्सेंचर ग्लोबल रिसर्च फर्म ने अपनी एआई रिसर्च रिर्पोट में जी-20 के कुछ देशों के लिए एआई के आर्थिक प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु एक ढांचा प्रदान किया है और एआई के माध्यम से भारत की

© 2026 डॉ०. घनश्याम सैनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

वार्षिक वृद्धि दर को 2035 तक 1.3 प्रतिशत तक बढाने का अनुमान लगाया है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और समावेशी विकास

एआई के माध्यम से वर्तमान में सभी स्तरों पर लोगों के पास गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य की पहुंच बढी है। समाज के एक बडे समूह के समावेशी वित्तीय विकास में एआई महत्वपूर्ण साबित हो रहा है जिन्हें अभी तक औपचारिक वित्तीय उत्पादों से बाहर रखा गया है। किसानों को सही समय पर कृषि से सम्बन्धित सलाह प्रदान करने में एआई सक्षम है उनकी उत्पादकता बढाने की दिशा में अप्रत्याशित कारकों को सम्बोधित करने में एआई सहायक सिद्ध हो रहा है। आज तेजी से होने वाले शहरीकरण एवं बढती आबादी की मांगों को पूरा करने के लिए स्मार्ट और कुशल शहरों के लिए बुनियादि ढांचे का निमार्ण कुछ ऐसे उदाहरण है जिन्हें एआई के माध्यम से कुशलतापूर्वक पूर्ण किया जा सकता है। ई-कॉमर्स कंपनियां भी अब अपने ग्राहकों या उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिये एआई का उपयोग करने लगी है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग एवं सम्भावनाएं -

वर्तमान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग में निरन्तर वृद्धि हुई है। एआई में वैश्विक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक वृद्धिशील मूल्य प्रदान करने की क्षमता है और इसमें अधिक प्रतिस्पद्र्वी लाभ हासिल होने की सम्भावना है। आवश्यकतानुसार निम्नलिखित क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अधिकतम उपयोग किया जा सकता है।

- **चिकित्सा देखभाल** - चिकित्सा देखभाल में एआई के प्रयोग से स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं तक सभी की पहुँच बनाने में उत्पन्न समस्याओं को हल करने में मदद मिल सकती है, खासतौर पर ग्रामीण इलाकों में जहां यातायात की समस्या तथा स्वास्थय देखभाल के लिए प्रशिक्षित कर्मियों की कमी है। एआई की मदद से विभिन्न प्रकार की बिमारियांे में डायग्नोस्टिक्स, व्यक्मिगत उपचार, संभावित महामारी की पहचान और एक्स-रे, इमेजिंग डायग्नोस्टिक्स को सरल बनाया जा सकता है। अब एआई की सहायता से विभिन्न प्रकार की शल्य चिकित्सा भी संभव बनायी जा सकी है।
- **कृषि** - एआई में देश में विभिन्न प्रकार की खाद्य क्रान्ति लाने एंव देश में भोजन की बढती मांग को पूरा करने की क्षमता हैं। एक अनुमान के अनुसार 2050 तक 50 प्रतिशत अधिक भोजन का उत्पादन करने एवं 2 अरब अतिरिक्त लोगों की खाद्य आवश्यकता को पूरा करने की जरूरत होगी जिसे एआई की मदद से पूरा किया जा सकता है। किसानों की सहायता एआई का प्रमुख कार्य होगा यथा - कृषि में फसल रोगों का पूर्वानूमान, मौसम की सटीक जानकारी, कीटनाशकों, उर्वरकों का सही इस्तेमाल आदि में एआई महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसानों को एआई उनकी स्थानीय भाषाओं में कृषि से सम्बन्धित सलाह प्रदान कर उनकी आय बढाती है।
- **उच्च गुणवत्तायुक्त परिवहन** - अभी जब देश के सभी शहरों में यातायात की समस्या, परिवहन का अधिक महंगा होना आदि प्रमुख समस्याएं है जिनका समाधान एआई के माध्यम से किया जा सकता है। एआई के संभावित उपयोग में स्वचालित मशीनों के रखरखाव एवं संचालन, स्वचालित ड्राईवरों का उपयोग, ऑटोनॉमस ट्रैकिंग एवं डिलिवरी तथा बेहतर यातायात प्ररबन्धन शामिल है।
- **खुदरा बाजार** - खुदरा बाजार के क्षेत्र में भी एआई का उपयोग ग्राहकों के व्यक्तिगत सुझाव, उनकी वरीयतानुसार उत्पाद, फोटो आधारित उत्पाद की खोज में किया जा सकता है। इसके अन्य उपयोगों में ग्राहक की मांग, बेहतर संधारण प्रबंधन, कुशल वितरण प्रबंधन शामिल है।
- **निर्माण के क्षेत्र में** - आज विनिर्माण उद्योगों में अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए एआई में बड़ी सम्भावनाएं दिखाई देती है। इसके प्रभाव इंजीनियरिंग में (अनुसंधान और विकास के लिए) आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, उत्पादन में लागत में कमी एवं दक्षता में वृद्धि कर सकते है। औद्योगिक उत्पादन में रखरखाव, गुणवत्ता की गारंटी भी एआई की मदद से करते हंै जैसे विभिन्न प्रकार के उत्पादों में दोष और विचलन की पहचान करने के लिए मशीन लर्निग एल्गोरिदम का प्रयोग किया जाता है। भण्डारण प्रबंधन में भी एआई के माध्यम से बेहतर ढंग से किया जा सकता है। एआई के बढते महत्व को देखते हुए आज दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां भी उत्पादन वितरण में इसकी सहायता लेती है।
- **ऊर्जा के क्षेत्र में** - आज ऊर्जा के क्षेत्र में भी एआई का उपयोग ऊर्जा के उत्पादन, संरक्षण एवं उपयोग की दक्षता के लिए किया जाता है। नवीन ऊर्जा प्रणालियों में एआई आधारित स्मार्ट मीटर द्वारा सक्षम इंटेलीजेंट ग्रिड के माध्यम से ऊर्जा के भण्डारण का समुचित प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा फोटोवोल्टिक ऊर्जा की विश्वसनियता और वहनीयता में भी सुधार लाया जा सकता है। विनिर्माण के क्षेत्र की तरह एआई को ग्रिड संरचना के पूर्वानूमानित रख रखाव के लिये भी उपयोग किया जाता है।
- **स्मार्ट शहर** - वर्तमान में नए विकसित स्मार्ट शहरों और बुनियादी ढाँचे में एआई का एकीकरण तेजी से शहरीकरण के कारण बढती आबादी की मांगों को पूरा करने में मदद कर सकता है और उन्हें जीवन की गुणवत्ता प्रदान कर सकता है। शहरों में साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में धोखाधड़ी का पता लगाने, वित्तीय लेन-देन में होने वाली अनियमितता, ट्रेंडिंग पैटर्न पर निगरानी जैसे मामलों में भी एआई का प्रयोग किया जाता है ।
- **अंतरिक्ष के क्षेत्र में** - अंतरिक्ष से सम्बन्धित विभिन्न शोध में भी एआई का उपयोग किया जा रहा है। अनेक प्रकार के खतरों से लड़ने में प्रयोग किया जाता है। एआई आधारित एल्गोरिदम से सटीक उपग्रहों को स्थापित किया जा सकता हैं ।
- **शिक्षा के क्षेत्र में** - शिक्षा के क्षेत्र में एआई का उपयोग बहुत तेजी से बढ रहा है। इसने शिक्षकों और छात्रों दोनों के सीखने- सिखाने के तरीकों को पूरी तरह बदल रहा है। हर छात्र के सीखने की क्षमता अलग होती है। एआई कमजोरी एवं क्षमता के अनुसार शिक्षण सामग्री तैयार करता है। विभिन्न एआई सॉफ़्टवेयर परीक्षा की कॉपियों, बहुविकल्पीय प्रश्नों को बहुत कम समय में जांच कर सटिक परिणाम प्रदर्शित करते है। शिक्षक विभिन्न प्रकार के एआई टूल्स से अपनी पाठ योजना, पाठयक्रम, क्विज, और समय सारणी का निर्माण कर सकते है। शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश कार्य,

© 2026 डॉ०. घनश्याम सैनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

शुल्क एवं छात्रों का रिकॉर्ड संधारण का कार्य भी एआई के माध्यम से सुगमता से पूर्ण किया जाता है।

इस प्रकार एआई हमारे समाज में समावेशी विकास के लिए एक उत्प्रेरक का कार्य करती हैं। इससे हमारे रहने और कार्य करने के तरीकों मे व्यापक परिवर्तन आया है। रोबोटिक्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों से उत्पादन एवं निर्माण के तरीकों में क्रान्तिकारी परिवर्तन देखने को मिला है। समाज के सभी तबको को सामाजिक, आर्थिक सुविधाओं का लाभ प्राप्त हुआ है। समावेशी एंव सुलभ विकास की अवधारणा की ओर सभी समाज अग्रसर है। मगर एआई आधारित विकास के अपने विशेष प्रकार के नुकसान भी है। एआई युक्त मशीनों के जितने फायदे है, उतने सभांवित खतरे भी है। विशेषज्ञों का मानना है कि सोचने-समझने वाले रोबोट अगर किसी कारण या परिस्थिति में मानव समाज को अपना दुश्मन मानने लगे तो मानवता के लिए बड़ा खतरा उत्पन्न हो जाएगा।
हमारे देश में भी व्यापक स्तर पर एआई का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाने लगा है। इसको लेकर हमारे समक्ष कुछ चुनौतियां भी है यथा - पहला हमारे यहां एआई से सम्बन्धित शोध प्रारम्भिक अवस्था में है, विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित अनुसंधान तथ्यों की कमी है। तथ्यों की औपचारिक विनिमय की स्थिति नहीं बन पायी हैं। तथ्यों की गोपनीयता एवं सुरक्षा सम्बंधी चिंताएं हैं। तथ्यों को आपराधिक उपयोग होने की संभावना भी अधिक है क्योंकि अभी यहां तथ्यों की गोपनीयता, सुरक्षा और नैतिकता से संबन्धित नियमों की अस्पष्टता है। यहां एआई विशेषज्ञता, कुशल कार्यकर्ताओं की कमी एवं व्यवसाय प्रक्रियाओं में एआई को अपनाने के लिए उच्च संसाधन लागत और जागरूकता की कमी भी है।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विगत कई दशकों से चर्चा का विषय रहा है। समाज चिन्तक एंव वैज्ञानिक इसके अच्छे एवं बुरे परिणामों को लेकर समय-समय पर विचार विमर्श करते रहते है। आज विश्व तकनीक के माध्यम से तेजी से बदल रहा है। विकास को गति प्रदान करने और लोगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग किया जा सकता है। बढते औद्योगीकरण, शहरीकरण और भूमंडलीकरण ने जहां विकास को तेज किया है वहीं इसने मानवता के समक्ष कई नई समस्याओं को जन्म दिया है जिनका समाधान करने के लिए सरकारें प्रयासरत है। जहां वैज्ञानिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अनेक प्रकार के लाभ बता रहे है, वहीं वह ये भी मानते हैं कि एआई से बड़ा नुकसान मानवता का होगा। सारा कार्य मशीनों से करवाया जाएगा जो स्वयं निर्णय लेगी और यदि उन पर समुचित नियंत्रण नही रहा तो यह मानव सभ्यता के लिए हानिकारक हो सकती है। ऐसे में एआई के प्रयोग से पहले इसके लाभ एवं हानि दोनों के सन्तुलन की आवश्यकता होगी। अन्त में उपरोक्त विश्लेषण के आलोक में कहा जा सकता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं समावेशी विकास में गहरा सम्बन्ध है। समावेशी विकास के एक अभिन्न उपकरण के रूप में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग विश्व के सभी समाज कर रहें है। सामाजिक असमानता को दूर करना, सुविधाओं तक सबकी पहुंच सुनिश्चित करना इसके प्रमुख उद्देश्य है। वर्तमान तकनीकी समाज में विकास के लिए इसे अपरिहार्य माना जाने लगा है।

संदर्भ सूची

1. योजना आयोग। तेज़, सतत् और ज़्यादा समग्र विकास: बारहवीं पंचवर्षीय योजना का नज़रिया। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2011।
2. त्रिपाठी अभिषेक। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: उपयोगिता और चुनौतियाँ। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन; 2025।
3. शर्मा सुनील कुमार। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: एक अध्ययन। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2025।
4. वर्मा के. मनीष। नई शिक्षा नीति एवं भारत में समावेशी विकास: संभावनाएँ, चुनौतियाँ एवं नवीनीकरण। जयपुर: रावत पब्लिकेशन; 2025।
5. वालावलकर गिरीश। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस। नई दिल्ली: माई मिरर पब्लिशिंग हाउस; 2025।
6. Muller M. Artificial intelligence and economic growth. *J Econ Perspect*. 2017;31(3):87-106.
7. प्रेस सूचना ब्यूरो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संबंधित दस्तावेज़। उपलब्ध: https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2026/feb/doc2026220797101.pdf
8. क्रॉनिकल इंडिया। भारत और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस। उपलब्ध: https://www.chronicleindia.in/hindi/articles/india-and-artificial-intelligence
9. Whalesbook। India's AI Future: Founders Urge Inclusion, Domestic Models for Equitable Growth। उपलब्ध: https://www.whalesbook.com/news/Hindi/tech/Indias-AI-Future-Founders-Urge-Inclusion-Domestic-Models-for-Equitable-Growth
10. नीति आयोग। Leveraging AI for Linguistic Inclusivity: Karya's Impact on Rural India।। उपलब्ध: https://frontiertech.niti.gov.in/story/leveraging-ai-for-linguistic-inclusivity-karyas-impact-on-rural-india/

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

डॉ. घनश्याम सैनी समाजशास्त्र के क्षेत्र में शिक्षण एवं शोध से जुड़े हैं। वर्तमान में वे श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान, भारत में सहायक आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। उनकी शैक्षणिक एवं शोध रुचियों में समाजशास्त्र, सामाजिक परिवर्तन, ग्रामीण विकास, शिक्षा तथा समकालीन सामाजिक मुद्दों का अध्ययन शामिल है।

© 2026 डॉ०. घनश्याम सैनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/